International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/advanced
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 59-60

सुशीला टाकभौरे के कहानी संग्रह "संघर्ष" की कहानियों की भाषा

पूजा रानी

एम.फिल.छात्रा, दक्षिण भारत हिन्दी, प्रचार सभा, मद्रास

प्रस्तावना

आधुनिक काल में स्त्री लेखन में डॉ0 सुशीला टाकभौरे एक ऐसा नाम है जिसने अनुभूति की मौलिकता व कलात्मक उत्कृष्टता में अपना विशेष स्थान बनाया है। इनका लेखन समाज सेविक व तदनुभूत अभिव्यक्ति है। समाज के एक अति निष्कृष्ट समझी जाने वाली भंगी जाति में जन्म लेकर संघर्षों के पायदान चढ़ती हुई डॉक्टर सुशीला टाकभौरे जी आज नागपुर कॉलेज में अध्यापन कार्य कर रही हैं।

मनुष्य के भावों व विचारों को व्यक्त करने का साधन भाषा है। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाषा' धातु से बना है। जिसका अर्थ है– कहना या बोलना। प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा के मौखिक और लिखित रूपों का प्रयोग करता है। सुशीला टाकभौरे जी ने दलितों के दयनीय जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए अपने भावों और विचारों को भाषा के लिखित रूप (कहानियों) का प्रयोग किया है।

भाषा की परिभाषाएं :–

1. महर्षि पाणिनि :– "सम्यक् प्रकार से उच्चरित वाणी ही भाषा है।"[1]
2. आचार्य किशोरी दास वाजपेयी :– "विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द समूह की भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने मनोभाव दूसरों के प्रति सरलता से प्रकट करते हैं।"[2]
3. डॉ0 श्यामसुन्दर दास :– "मनुष्य और मनुष्य के बीच ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।"[3]

सुशीला टाकभौरे जी ने जिस भाषा का प्रयोग अपने कहानी संग्रह में किया है, वह दलितों के दयनीय जीवन स्तर की परिचायक है। इनकी भाषा उसी तरह उसी के भावों को वहन करने वाली बन गई है। उदाहरण–

"संघर्ष" कहानी का मुख्य पात्र 'शंकर' जो कि सफाई कामगार समुदाय से सम्बन्धित है, जिसकी नानी गांव में सफाई का काम करती है एवं उसके साथ ही रहती है। यदि वह कोई शरारत कर भी देता तो लोग उस पर ताने कसते –कि तुम तो शनीचर हो....। तुम्हारी नानी सारे गांव का गू–मूत करती है और तुम्हें मस्ती चढ़ी रहती है। ऐसी बातें सुनकर शंकर को बहुत बुरा लगता था। [4]

यदि शंकर स्वर्णों की किसी वस्तु को छू भी देता तो वे लोग उसे कुत्ते की तरह हड़काते हुए भगाते और डंडे से मारने दौड़ते– "अरे–अरे, हट....हट, चल भाग...छूत कर रहा है।...पाजी कहीं का... कुत्ता...सूअर... ।"[5]

कभी–कभी जब वह अपने मित्रों के घर के भीतर तक चला जाता तो वे भी उसे वहां से भगाते...."घर में मत आ... बाहर भाग...बाहर दूर खड़ा होकर बात कर... ।"[6]

डॉ0 सुशीला जी ने जिन शब्दों का प्रयोग अपने कहानी संग्रह "संघर्ष" में किया है वे शब्द अत्यन्त स्वाभाविक है और तात्कालिन स्थिति को दृष्टयांकित करते हैं।

"छौआ माँ" कहानी में छौआ माँ की उम्र 60 के लगभग होगी, इस उम्र में उसे आराम करना चाहिए, मगर उसे गाँव के काम से फुरसत ही नहीं मिलती। जचकी का काम, जच्चा के सारे घर की सफाई, झाड़ू–पोंछा, लीपना–पोतना, वह करती है, जच्चा बच्चा की तेल मालिस करती है और उनके गंदे कपड़े भी धोती है।

उपरोक्त कहानी में प्रयुक्त भाषा सम्पूर्ण दृष्य आँखों के सामने पेश करती है। पाठक को लगता है जैसे दृष्य आँखों के सामने ही हो रहा हो।

डॉ0 सुशीला टाकभौरे दलित साहित्य की उत्कृष्ट लेखिका है। उनकी कहानियों की भाषा दलित साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने में सक्षम हुई है। भाषा की दृष्टि से लेखिका अपने विषय के बहुत समीप है तथा वह इसे सरल तथा लोकोपयोगी बनाने में पूरी तरह से सक्षम है। लेखिका ने कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है, जो दलित साहित्य के लिए अत्यन्त सक्षम और अनिवार्य माने जाते हैं। उदाहरण–संडास, झाड़ू, टोकरी, मल अथवा मूत्र, सूअरों का हाहाकार, शनीचर, गू–मूत, पाजी, कुत्ता, जूठन, गंदगी, भंगी, टोकना और पंजर, मैला गाड़ी, टुकड़ों पर पलने वाले शुद्र, भीखमंगे, जमादारन, दबे–कुचले पीड़ित इत्यादि।

1. व्यंग्यात्मक भाषा –

"संघर्ष" कहानी में संग्रह में लेखिका द्वारा प्रयुक्त भाषा किसी एक ही प्रवाह में बंध कर नहीं चली है, भाषा इतनी स्वाभाविक है कि प्रत्येक परिस्थिति का सहज ही असर दिखाई पड़ता है।

"छौआ माँ" कहानी में छौआ माँ को सारे गांव के 'जच्चा–बच्चा' का काम करना पड़ता था, एक बार उसे गांव से बाहर कहीं काम जाना पड़ा। उसकी अनुपस्थिति में गांव वालों ने उसकी लड़की तुलसा को वह काम करने को विवश करते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से विवश करते हुए कहा...ऐसे कैसे नहीं जायेगी....चलना पड़ेगा। 'दाई' की बेटी को 'दाईपना' नहीं मालूम....ऐसे कैसे हो सकता है।[7]

"संघर्ष" कहानी में जब शंकर मास्टर जी के प्रश्नों का फुर्ती से जवाब देता है, तो कक्षा के बाहर दूसरे छात्र उस पर व्यंग्य कसते हैं..."शंकर तू तो बड़ा होशियार है रे...। क्यों रे शंकर, तू किस चक्की का आटा खाता है रे....?"[8]

ये सब व्यंग्य भाषा में सहज ही आ गये हैं। ऐसे व्यंग्य कटु व्यंग्य है। कहानी संग्रह में यह व्यंग्यात्मक भाषा दलितों के जीवन की वेदना, क्षोभ, विवशता, रूदन, आत्मग्लानि और मानवता के लिए चुनौती लिये दिखती है।

2. वातावरण के अनुकूल भाषा–

"जन्मदिन कहानी में मुन्ना प्रेम राठौर भैया के बेटे के जन्मदिन पर शाम को 5 बजे 'गाड़ी खाना' चला गया। मुन्ना ने 'गाड़ी खाना' पहली बार ध्यान से देखा। ढलान के पास एक लाईन से दो मैला गाड़ी खड़ी हैं। मैला गाड़ी देखकर उसे बहुत घिन आई। अपनी नाक को हाथ से दबाकर मुन्ना ने धीरे से पूछा– "मैला गाड़ी में मैला कैसे भरते हैं...?"[9]

मुन्ना को बड़ी जिज्ञासा हुई। मिटटी गोबर की बात होती तो वह यह बात खुद समझ लेता। मगर 'इन्सानों का मलमूत्र, गाड़ी भर मैला....' सोचते ही जुगुप्सा के कारण मुन्ना का मुँह थूक से भर गया। उसने आँगन में खड़े होकर बाहर दूर थूक दिया।[10]

3. **पात्रानुकूल भाषा :–**

लेखिका ने प्रत्येक पात्र की भाषा उसके मुख से वैसे ही प्रवाहित की है, जैसा वह पात्र है। यदि पात्र शिक्षित है, तो भाषा में तहजीब भी स्पष्ट दिख पड़ी है। गांव में जचकी हेतु जब तक गांव वाला "छौआ माँ" कहानी में दाई को बुलाने आता है, तो कहता है– "छौआ माँ, मैं गांव के पटैल के घर का नौकर नारायण हूँ, अरे दाई माँ जरा सुन तो सही, हम तोहे लेने आये हैं...। हम तोहो लेकर ही जायेगें...।"[11]

'धूप से भी बड़ा' कहानी में रोमा जो कि एक पढ़ी लिखी लड़की है, अन्त में सही जीवन साथी को पाकर कहती है....जो दुख–सुख में सच्चा साथ निभाते हैं– वे ही बड़े होते हैं। जिसके विचार ऊंचे होते हैं, वह जाति–धर्म से ऊपर है। सबसे श्रेष्ठ बड़ा है– धूप से भी बड़ा।[12]

4. सामाजिक सुधार का वर्णन करती भाषा–

"संघर्ष" कहानी संग्रह में लेखिका ने न सिर्फ दलित जीवन का वर्णन ही किया है, अपितु समाज सुधार की बात भी की है।

"सिलिया" कहानी में सिलिया ने मन ही मन दृढ़ संकल्प किया– "मैं बहुत आगे तक पढूंगी, पढ़ती रहूंगी। उन सभी परम्पराओं के मूल कारणों का पता लगाउंगी, जिन्होंने हमें समाज में अछूत बना दिया। मैं विद्या, बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊंचा साबित करके रहूंगी। किसी के सामने झुकूंगी नहीं, न ही अपना अपमान सहन करूंगी।"[13]

"नयी राह की खोज" कहानी में कार्यक्रम के अन्त में उपराष्ट्रपति का आभार मानते हुए हरिचन्द ने अपने जाति समुदाय की ओर से कहा– हम सभी अपने देश के प्रति निष्ठा रखते हैं। संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर के प्रति हम सब आभारी हैं, जिन्होंने संविधान के द्वारा हमें समता–स्वतंत्रता का अधिकार देकर सम्मान का जीवन जीने की राह दिखाई है।[14]

5. आक्रोश भरे स्वर की भाषा–

"संघर्ष" कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियां सफाई कामगारों के जीवन की गाथा का वर्णन है। सदियों से इन लोगों का शोषण होता रहा है, पर अत्याचार का अंत न होने पर इन लोगों के हृदय में शोषण के खिलाफ आक्रोश एवं रोष उत्पन्न हो जाता है।

"दमदार" कहानी में सुमन देवकरण के होटल के सामने नीचे बैठकर चाय पी रही थी। जग्गू ने वहां से गुजरते हुए उसे बैठे देखा और डांटकर कहा "ए...ऐसी यहां क्यों बैठी है?" सुमन ने ऐंठकर कहा– "बैठी हूं, मेरी मर्जी...।"

जम्मू जोर से चिल्लाया– "तेरी मर्जी....? तेरी ऐसी की तैसी....।"

सुमन और जोर से चिल्लाई– "ए...गाली मत दे।"

जम्मू गुस्से से बोला– "कंजरी...तू है ही कंजरनी, तुम को कोई शरम नहीं है। नीची जाति के लोग नीच ही रहते हैं...।"

अपनी जाति का अपमान होते देख, सुमन तन कर खड़ी हो गई– क्या कहा ...? कंजरनी....? अरे कंजर, तू तो कंजरों से भी गया बीता है। दिन में आने से डरता है। रात में मेरे घर में घुसा रहता है। काहे का पहलवान है तू....?"[15]

6. प्रादेशिक, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का भाषा में प्रयोग :–

भले ही सुशीला टाकभौरे का जन्म महाराष्ट्र में हुआ लेकिन उनके कहानी संग्रह की कहानियों की भाषाओं में प्रादेशिक शब्दों का सहज ही प्रयोग हुआ है। साथ ही ग्रामीण नगरीय एवं अंग्रेजी भाषा के शब्द भी सहज ही आ गये हैं।

"नयी राह की खोज" कहानी में कई अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे –कि फर्स्ट स्टेंडर्ड, ट्यूशन, म्यूनिसीपाल्टी, इंग्लिश कॉन्चेट।

'दमदार' कहानी में सुमन समाज में जग्गू पहलवान के आंतक व अत्याचारों के चर्चे सुनकर परेशान हो जाती है और वह गुस्से में खुद से ही बोल पड़ती है–"ठठरी बंधा, मेरे पल्ले पड़ेगा.. तो सारी हेकड़ी निकाल दूंगी।"[16]

"संघर्ष" कहानी में शंकर नामक पात्र भले ही स्कूल में पढ़ता है तथा शिक्षा पाकर जीवन सुधारना चाहता है, परन्तु फिर भी वह गांव के जीवन के अक्षरों के तहत कुत्ता, सूअर, पाजी जैसे गालियां भी बकता है। इस प्रकार सुशीला टाकभौरे जी ने अपनी कहानियों के संग्रह में उन कहानियों के पात्रों के माध्यम से वहां की प्रादेशिक, अंग्रजी एवं उर्दू आदि मिश्रित भाषाओं का प्रयोग किया है।

डॉ0 सुशीला टाकभौरे जी द्वारा लिखित सभी कहानियों में प्रयुक्त भाषा ठीक वैसी ही है जैसा उस कहानी का पात्र स्वभाव रूप से पाठक को दिख पड़ा है। यदि पात्र शिक्षित है तो भाषा एवं शब्दों पर भी उसका प्रभाव शैक्षिक है लेकिन गंवार एवं अशिक्षित पात्रों द्वारा प्रयुक्त भाषा उनके स्वभावानुरूप ही दिखाई गई है। डॉ0 सुशीला टाकभौरे जी की कहानियों की भाषा सरल, स्पष्ट व भावानुकूल होने के कारण पाठक के हृदय में अपनी छाप छोड़ देती है तथा अनायास ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। किसी भी साहित्य का विकास उसकी भाषा की सफलता पर निर्भर करता है। डॉ0 सुशीला टाकभौरे जी की कहानियों की भाषा सफलता की कसौटी पर खरी उतरती है।

संदर्भ सूचि :–

1. महर्षि पाणिनि, पुस्तक–प्रतियोगिता साहित्य, भाषा सम्बन्धी विचार
2. आचार्य वाजपेयी किशोरी दास, पुस्तक–प्रतियोगिता साहित्य, भाषा सम्बन्धी विचार
3. डॉ0 दास श्याम सुन्दर, पुस्तक–प्रतियोगिता साहित्य, भाषा सम्बन्धी विचार
4. टाकभौरे सुशीला, "संघर्ष" कहानी संग्रह, पृष्ठ संख्या – 8
5. वही, पृष्ठ संख्या – 10
6. वही
7. वही, पृष्ठ संख्या – 71
8. वही, पृष्ठ संख्या – 12
9. वही, पृष्ठ संख्या – 33
10. वही
11. वही, पृष्ठ संख्या – 78
12. वही, पृष्ठ संख्या – 104
13. वही, पृष्ठ संख्या – 48
14. वही, पृष्ठ संख्या – 89
15. वही, पृष्ठ संख्या – 134
16. वही, पृष्ठ संख्या – 133